

अध्याय

पत्रसंख्या



भाषावत

॥ अथार्येकतीसावा ॥ ११ ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ ॐ नमो श्रीगुरुभ्यस्तु ॥ तु
 देही असोनी देहातीत ॥ गुणी निर्गुनवर्तीत ॥ देहममवतु जनां हीं ॥ १ ॥
 देहममतानाही निशेश ॥ या का गी पाणी प्या ला सी छी ॥ पुतना शोषि
 की प्रसूदा दा वृन्नि देखा सी ला ॥ शो जो तु वैकुण्ठ पीठ विराजमान ॥
 सा तु जनाही देहा भीमान ॥ होत नी गो वळं समान ॥ हुं बळी बाण घाली
 सि स्वये ॥ १ ॥ तु ज पा वा वया क ॥ सदा सो सी तिसो वळं वो वळं
 तो तु मेळुनी गो वळं ॥ जेवन स्वयं स्वयं करी सी ॥ १ ॥ ज्या ते ह्य
 ण ति दु राचार ॥ तो तु वा करनी विभी चार ॥ केळा गो पी कां चा उ थां रा हे
 था ग म्यं चरी त्र वेद शास्त्रां ॥ ५ ॥ घरी सोळा सहस्र नारी ॥ ना द ति सा गी
 सहस्र कुमारी ॥ तो तु बाळ ब्रह्म चारी ॥ सनकु मारी वंदी जे ॥ धा तु सी

या ब्रह्मचर्या वीथोरी। सुकूनारदवदी तिसीरी। हनुमंत लोळें पाया
वरी। तुब्रं ह्या च्यारीने ष्टक्य॥७॥ व्रतबंध नद्ध तांचीं त्रिपाथी। तुवा भोगी
ली गोवळें पेंथी। तो तुं उर्ध्वरेता श्रीशुधी॥ तुजं भीष्मवंदी सर्वदा॥८॥
नवल ह्यगोकठपासी॥ तुज बांधवें न हृषीकेशी। तो तु भावार्थ बाधला
सी॥ रास कीडे सी गोपी की॥ थजें सेंडें ते ज्याचे मनोगत। ते साते सातु
किडत। सामा सरात्री करनी ते येत। प्रमया की विचरसी॥९॥ तो तुं का
मासी नातळता। कामणी कांम पूर्ण करीता। लाज उनी वीथी वेदाथी॥१०॥
गोपी कासमस्ता तारी ल्या॥११॥ गोपातारी ल्या प्रेमाळु तें। गाईतारी ल्या वेणु
गीते। गोळी येतारी लीं समस्तें। श्री हस्पा ना येनि जय गेः॥१२॥ कैमुतारी
लादृष्ट बुधी। व्याधुतारी लाघपराथी। येसा हपाळु श्रीशुधी। संसार थव
थी श्री हस्पा॥१३॥ नुलें घवे श्री हस्पाची या बोला। येमे गुरुपुत्र आपु

अभा

निदीधला। तोहस्यतनुयागीताजाला। जो न केँ थांखिला कळीकाळा। ११॥
भागवती कळसाध्यावो। जेनी जथा माळाई ले देवो। तो अती गहन प्र
वो। सो गे शु क देवो परीक्षीतिसि। १२॥ कळसावर तेन च दे काम। तेवी
देवेंटा कीलेंनी जथा मारा कीलेंनी रोपणं समु मा कळसो पक्रम याहे
तु। १३॥ धावे दशाचार्यनी जनिर्वो हो। देही नुम जेथ हंभावो। तो होये कति
सावा अध्यावो। जेथेंनी जथां मा देवो वई छेनी चो। १४॥ हस्य येनि ज
थाम गमन। बह्मादीकां अतर्क जाण। येका जना देना हपा पुण। विश
देव्या स्वान सागेंल। १५॥ द्वीपक द्वययाण। कळ्यांनी जथा मांनी घे
ळ श्री हस्य। तेनी रीण काळीचे दरशण। पाहों सुरगण स्वये जाले।
१६॥ तेची अर्थीचेंनी रोपण। श्री शु कु सागें ज्ञापण। ओता परीक्षीति
सावधान। श्री हस्य। निर्याण अवणार्थी। १७॥ श्लो॥ शु क उवाचः। १८॥

३

१२॥

१२॥

3A

अत्रागमं बह्यः ॥ भगवान्यां च समभवः ॥ महेंद्रः प्रमुखा देवामुनयः स
च ये स्वरः ॥ १ ॥ पीतरः सीधगंधर्वी विद्याधरमहोरगा ॥ चरणं सस्वर
सासी कीन्नरारसो दीजा ॥ २ ॥ टीका ॥ १ ॥ जो श्रीव्यासाचें नीज जीवेन जो
योगीया चुडारन ॥ तो श्रीशुक संखें स्ववेधापण ॥ श्रीकृष्ण निर्याणनी
सोपी ॥ २ ॥ ॥ शुक म्हणे परीक्षीति नीज धामा जातां श्रीपति ॥ देवदरशा
णासयेति ॥ विमानपत्तीसवेग ॥ ३ ॥ व्यास स्वर आला तेथें भठ भवा
नी समवेत ॥ ईंद्रमुखं देवसमस्त ॥ सगणयुक्त ते आले ॥ ४ ॥ ॥ सनका
दिकमुनी पंक्ती ॥ थालें दक्षादी प्रजापति ॥ धर्ममादी वीरयेति ॥ कपीला
दिथां वतिमाहासीधी ॥ ५ ॥ थालें गंधर्व विद्याधरा ये स्वर चरण कीं नू
राबीभीशणादी राक्षस थोर त्वेगी श्रीधर पाहोंयेति ॥ ६ ॥ पाहावया श्री
रंग ॥ आले पाताळीचें पंढरा ॥ ज्या ते अणति महोरगा ॥ तेही सवेग पेशा
ले ॥ ७ ॥ ॥ दीज आले दंतात्रयादीका ॥ नोरद पाहों आला कोतुका ॥ दीज पक्षी

५
॥३॥
गरुडप्रमुख। सत्वरदेखते आले ॥२०॥ रंभा उर्वसी मेनीका। अप्सरा
ज्या। अप्रुनायेका। छत्तण दसराणं धावाका। धरनी देखाया आल्या ॥२१॥
छत्तण स्वरूप पाहावया। नयनी थोर घेत ला थाया। या लागी देव समुदाया
येणे लवला ह्या जालें तेथें ॥२२॥ लोक ॥०॥ द्रष्टुकामा भवतो नीर्याण पर
मो सुकः ॥ गायंत श्वश्रुणं तश्चः शौरक मोणि जन्मच ॥३॥ टी ॥०॥ छत्तण पा
हावया आवडी। दृष्टी थावेल वड्यावडी। होत डोळ्यां परवडी। अभीन
वगेडी छत्तणाची ॥३०॥ छत्तण नीर्याण दसराणा पाहावया उछाव पुणी
सत्वर आले सुरगण ॥ पुढे तिज्जी छत्तण दसराण आह्मा केचें ॥३१॥ ॥३॥
सौंदर्याची नीज सीमा। घनशाम सुंदर प्रतिमां। तो छत्तण गेली था
निज था मा। दसराण आह्मा मग केचें ॥३२॥ छत्तण दसराणाची गो
डी ॥ सुरगणा लागली असें गाढी ॥

याकागीततीतातडी॥आलेआवडीदरुणार्थ॥३३॥
दृष्टं वरीत्रगीतगात॥मीळोनीसुरवरसमस्त॥आलेदरुणार्थसत्तर॥३४॥
श्लोकः॥ वज्रपुष्पवर्षाणीः कीर्मानां वळीभीर्नमः॥ कुर्वतः स कुळराज
नमस्तया परमया यताः॥**टीका**॥ वीमानां वळीं आकाशी॥ तथ द्वादशी
याचोपासी॥ संमुख देखोनी हरीकेशी॥ जे जे करारी तेही वेलें॥३५॥
देखोनी श्रीदृष्टं नाथ॥ मकी उद्धावले वीत॥ दीव्यसुमना वंवर रात॥
मीळोनी समस्त समकाळें॥३६॥ दीव्यसुमना चारोळा॥ दृष्टं योपासी वीखुरका
तेढां दृष्टं शोभला साकाळा॥ घनः शोभली साजीरी॥३७॥**श्लोकः**॥ भग
वां न्पीतामहं वीक्ष विभुतीरास नो वीसुः सा योज्यामनी मासानं पदमेवे त्रे न्य
मीळव॥५॥**टीका**॥ देवपावले सी ब्रगती॥ ब्रह्मां देखी कासं मुख रखी ती॥

सदासीउसमवीभुवी॥यातेहीश्रीपतीदेखताजाळा॥३८॥ईद्रादीकनी
जवीभुती॥यावेदेखोनीश्रीपती॥स्वबेजपस्मदकादही॥तेसहजस्त्री
तीसांकीके॥३९॥सांकीकेउघडेनयेन॥परीस्त्रीतीनांहीअधीकन्येन॥तो
आसांआसतेपरीपूर्वी॥तरीकांश्रीदखनयेनसांकी॥४०॥देखोनीदेवस
मुद्दोवा॥कांहीनोबळतांदेवा॥नेत्रसांकावयकोठासावोतोअसीप्राकोज
वधारा॥४१॥द्वारेअसतांश्रीदखनाय॥सुरवरप्रार्थुजातेतथं॥तीहीवी
नवीकादेवकीसुत॥दाससमस्तदयापाती॥४२॥स्वलोकाकोकपाळ॥आम्ही
उसेदाससकळ॥नीजधांसांजायांयेकवेळ॥आअमसमस्तपुनीतकीजे॥४३॥
यासमस्तांदेवाप्रती॥पुनमुखेबोकीकाश्रीपती॥येदुक्कळश्रयायेअंती॥ये
छोनीश्रीतीतेढांमार्गे॥४४॥हेकांनीदखवटंती॥सुरवरसंशोकेपीती

आमंसीवस्यजाताश्रीपती॥ववनोकीनुकंवी॥४॥तेसंधीवाटाकुंनगवो॥आका
सुरवरसमुदावो॥यावाछेकावयाअहंभावो॥नीजनेत्रपाहोहोहरीसांकी॥४॥
देवांवावहुंसमुदावो॥तेथेमीकोठेकोठेजांवो॥यांसीकावयापाहो॥नेत्र
साकुंनीदेवासमाधीदावी॥४॥नाहीसमाधीजांणीव्यान॥सुखंस्वप्नंमुप
रीपुर्ण॥तोहीनीजनेत्रसाकुंन॥समाधीनद्वारामुपादानी॥४॥स्वच्छंदमुक्तये
गीयांसी॥तेस्छीतीनाही॥श्रीछकाती॥जवर्ग्यगीसाधकांसी॥तेपरीक्षीतीसी
अवसांगे॥४॥**अथाक॥**लोकाभीरागंस्वतन्त्रधारणांध्यानमंगळं॥योगधारणाया
ज्ञेयादध्याधामावीशस्वकं॥४॥**टीका॥**कळीकाळजीढांजीयांजांढां॥स्वच्छंद
मुक्तयोगीजनं॥तेअशीधारणांकरुनपुर्ण॥स्वदेहजाकुंनीस्वसपहोती॥४॥
सुखंस्वस्वपरीपुर्ण॥तोकांकरिकयोगधारणां॥यावाकीकावीग्रहीदेहोजां

णं॥ कशवेद हन का शावे॥ ५१॥ देख तां डोळ यां का गंध्यां न॥ संपूर्ण जे ये वी गु
 ते मं नं॥ ये व्हडे उदरे सों सो द र्य पूर्ण॥ नीज मोहन जगावे॥ ५२॥ ज्या वे देख तां बर वे
 पणं॥ मद नुं पोटा आ का आपणं॥ कस्मी सु कली वरण देखो व॥ जेत न्य वन श्री
 दस्तं॥ ५३॥ ज्या वे योगी यां सदा ध्यान॥ जीवा दी का नीय सीत न॥ सगळ मंगळा
 जे आया तं वं॥ जेत न्य वन श्री दस्तं॥ ५४॥ दस्त खे ये आ सां रां मूं॥ या का गी तो ज
 गा या आ रां मूं॥ की का वी ग्र ही धनः का मूं॥ ध्या न भग म्य सी दु पं॥ ५५॥ दावा मी प्रा
 की का प्रसूद॥ न वे दे का की यां दे वी पा॥ तो दे हो वी न के देख॥ मरणां सगळे ये
 के वं॥ ५६॥ दस्त प्र गेट ज्या वा ह दं॥ तो दे ही व हो ये वी दे ही॥ मां या दस्त वे व
 मं हं॥ दे ह व का ठ अ से क॥ ५७॥ दस्त दे हो नां ही नी सा का॥ तो अ सा सु वी स
 ज हा आ का॥ जे सा द र्य णी वा कोट का॥ प्र नी वी वी जा पू का आ प के व गं॥ ५८॥

ज्यावे मारी तानां मस्मरतां॥ सत्तां येनी रडो जन्म मरण॥ तो सत्तां पावे जेनी दां न जे
भक्तां सगां सूरही॥ ५९॥ आस माये व्याख कीळा॥ सत्तां सत्तां सत्तां प्रगट जाळा॥ तो
कीळा या गुनी संवळा॥ नीजर पीठे ला नीजर॥ ६०॥ सत्तां दे हो ने ला ना यागी का॥ तो
कीळा वीर ही संवळा॥ भक्तांनी प्रतीष्टी का॥ स्वयं गे का नी ज धां मा॥ ६१॥ जे से जे सा
भक्तां वा पावो॥ ते सा ने सा हो ये वे वो॥ तो भक्तांनी स्थापुनी दे हो॥ नी ज धां मा पा हा
हो न व वो नी गे का॥ ६२॥ हो कां सत्तां मनी जे स गुं यो॥ ते ही दे ह दो हो न घे डे जां ला
सत्तां श्रेय जग संपूर्ण॥ ते व्हा हो न क दे ह न ज ग वे॥ ६३॥ जे लां मा ये सी नी ज पो टी॥
दा वी ल्या ब्रं हां उ को टी॥ या सत्तां दे हो दा हा सा टी॥ ज मा यी गो वी नु र ध क॥ ६४॥ दे सी
या ही फ की वी चारी तां॥ ज ती खु ल्ले ये ग्य ता॥ सत्तां दे हो वी वी दे ह ता॥ ते ये दे ह
क ता ते गै वी॥ ६५॥ सत्तां ये अस ने जां लां॥ हे श्री सत्तां वी स्व ये लां लां॥ ते ये वे दा

जैवो लोकां॥ जां ठां पढो से रजां॥ ६८॥ ते दृष्टां वीर्यगं म्यं गती॥ जीव वीरं व्यादी
 ने लांती॥ हां वीर कल्पना रसी वीती॥ आम्हां संवे श्रीपती ये छेळा॥ ६९॥ हे सी ये
 श्रीप्राये पृष्ठे॥ आं नंद के सुरगं ठां॥ अवद्ये हो उनी सावधां जं॥ ७०॥ कदा स पूर्ण मां जी
 ला॥ ६८॥ **श्लोक** दिवी दुंदुभये नंदे तु सुमनसश्च खाव॥ ससर्धर्मो धुती फुमे
 कीर्तीः श्रीः श्या न वं य फ॥ ७१॥ **श्लोक** उक्तं मले सुरगं ठां॥ दीवी दुंदुभी जाहा नी
 क्यो लां ठां॥ दीव्य सुमने गगनी हुं न॥ वरुण ले पृष्ठे दृष्टां वरी॥ ६९॥ वैकुण्ठ दीप्ति
 र्ग संपती॥ पुत्रो को आं ठी न्या श्रीपती॥ नायेतानी ज धां मां प्रती॥ आं मुं व्या हा
 ती दे छेळा॥ ७०॥ हे से देव उ कदा सां नी॥ पुनः पुनां वरुणा ती सुमनी॥ सीवा दी पा
 हातां सावधां नी॥ अतर्क्य गमे नी हरि गे ला॥ ७१॥ आम्ही स कळ माये वे नी ये तें
 आम्ही द्रष्टुं सर्व स ज्ञां ते॥ हे सा भी मां न दे वां ते॥ सां सी श्री दृष्टां ना ये ना ग वी के

६५

(X)

६५

अ१

॥ ७२ ॥

७४
अलक्ष्म्यां नीजगती॥ संसृज्यं नं ठाती॥ ते ठां वीस्मीत होती॥ आश्वीये
करीती सुरवर्य॥ ७३॥ देवपरमाश्वीये करीती॥ तं वसस धर्मधुती करीती॥ श्री
ये समवेतनी घती॥ सांडुनी हीती छछं कदो॥ ७४॥ सस धर्मधुती करीती॥ यां
नीनी सस छरणी वस्ती॥ या कागी या सस वेनी घती॥ सांडुनी हीती त
काळा॥ ७५॥ तु रे सामा नीसी परी हीती॥ सस धर्मधुती करीती॥ नीने पसांडनी गती
हीती॥ देकत ये अर्थी वीयास॥ ७६॥ सजपा हातां श्री छछं मुनी॥ स्थिरा वली ज्या
जायीती॥ तेय सस धर्मधुती करीती॥ सा गज्य वसती कुराया॥ ७७॥ कवळम
कांनुगुही॥ श्री छछं स्वयं नीळा वीग्रही॥ सा छछां मीगती पाही॥ नपडेठां छं
सां दीका॥ ७८॥ **श्लोक**॥ देवा देयो ब्रह्मं मुख्यानी वीजतं स्वधामनी॥ अवीज्ञा
त गती छछा दद्रुमुश्वाती वीस्मीता॥ ७९॥ **टीका**॥ छं द्रब्रह्मस्य ती मुख्यत्वं ब्रह्मं

देवपादुनपरमप्रमां॥ लक्षं प्रवेशकानीजधां मां॥ अतर्क्ये प्रेमां हरीवी॥ ७९॥

अतर्क्ये श्री लक्षां वीगती॥ देवांस लक्षे नीजशक्ती॥ वीस्मयो पावो नीवीती॥ स्व

१७॥ धां मां प्रतीनीवाले॥ ८०॥ देवजातं स्वधां मां प्रती॥ दृढा दृढां आशीये करीनी॥

अलक्षकसेनां लक्षंगती॥ अतर्क्ये गती सीवादीमां॥ ८१॥ ते वी लक्षां वी अतर्क्य

गती॥ देवांसी लक्षे नां देवशक्ती॥ ते वी सीवा दृढां ती॥ परीक्षीती प्रती शुक्रसां

ग॥ ८२॥ **श्लोका**॥ सोदामीन्यायेथाका राय या हीवा प्रमंडळं॥ गतीं नित्यं हतेमयः

स्तथा लक्षं स्ये देवते॥ ८३॥ **टीका**॥ वी लक्षं पञ्चमं मंडळी॥ ते को दुन आली को वेंगे नी

गती नरां नमस्ते पुतळी॥ ते सी लक्षं गती जाती दुर्गम देवां॥ ८४॥ वी लक्षं मनुं

देखती॥ परी नमस्ते ये ती जाती गती॥ ते वी लक्षां वी अवतार शक्ती॥ नमस्ते नी श्री ती

देवांसी॥ ८५॥ ते युन येयं येन॥ कां येयं ने ये जां ठो॥ हे ना ही लक्षां सी करणं॥ तो स

सर्वत्र पूर्णपठे परी पूर्ण ॥ ८४ ॥ देसा सखं गेलानी जथां मां ॥ परमाद्रुतया वामही मां ॥
अकस्मत्कदेनां सखगरी मां ॥ जांढोनी आश्रमांनी द्याला ॥ ८५ ॥ **श्लोक** ॥ ब्रम्हांस द्वादयो
स्वेषूद्रुष्टा योगगतीं हरे ॥ वीरमीतास्तां प्रसेरीं तेष्वस्य कोकं ये यस्तदा ॥ ८६ ॥ **टीका** ॥ आ
हमीमां यानीयते नीजराक्ती ॥ आहमीमां यानीयते योगगती ॥ आहमी सर्वद्रष्टृवीर्यगती ॥ हा
अभीमानसीती देवांसी ॥ ८७ ॥ तीही देवांनी सखंगती ॥ गळाळी जांढी वीर्यगती ॥ का
जापळाळी अभीमान रखीती ॥ तीही सखंगती ॥ **श्लोक** ॥ ८८ ॥ रुद्रपंचमुखं गरीरु
ती ॥ ब्रम्हांस द्वादमुखं वळीं कीर्ती ॥ देवर्षी समयाते पावती ॥ अगाधग ॥ **श्लोक** ॥ ८९ ॥
करीती सखंगती ॥ देवासीन वळीं उरी ॥ वळीं ती श्रीसखंगती ॥ स्वकोकप्रती सुरगेली
॥ ९० ॥ पुर्वी सांगीती की सखंगती ॥ ते वीसांग व्यावीरा दखीती ॥ ते परलोनी परी द्वा
ती ॥ अती प्रीती शुक्रसांगे ॥ ९१ ॥ **श्लोक** ॥ राजन्य परस्य तनुं सुख्य ननं पययेहा ॥ माया
वीडं वनमवेही येथानटस्य ॥ सुष्टोतेने दमनुं वीर्यवीर्य वाते ॥ सहस्रवासुमहीने

१८५

(९)

१८५

परतः स आस्ते ॥ ११ ॥ **टीका** हे कराया परीक्षीती ॥ सकळ कारणां कारणां श्रीपती ॥ मा
 ये मीही जेतनां शक्ती ॥ जांवांनी श्यीती श्रीसक्तं ॥ १२ ॥ ज्यासीनां ही व्यक्ती वर्णे ॥ ज्या
 सीनां ही रूप गुंठां ॥ तो स्वकी का श्रीसक्तं ॥ ये दुवं जी जांवा अवतरी का ॥ १३ ॥ जो स
 कळ वंश वंश जु जांवा ॥ जो सकळ गो वंश गुंठां ॥ जो सकळ न्याती वी न्याती आप
 णां ॥ स्वये श्रीसक्तं सर्वदी ॥ १४ ॥ जो सी ये दुवं जी ते जन्म ॥ गोवर्धनोर्ध्व रणां दीर्घम ॥
 कुळ ह्योनी धन धर्म ॥ हे स्वकी का कर्म माया ॥ १५ ॥ येण माये वी या सता ॥ मह
 कुर्मां दी अवतरता ॥ से र्वी धरी श्वेत या हाता ॥ हे अवतार्यो ग्यवा दत्ता मी ॥ १६ ॥ श्री
 सक्तं न हे अवतार ॥ हा अवतारी पुढं वी न्यात्र ॥ या वी अवतार्य वरीत्र ॥ ब्रह्मां दी रद्र
 ने ठांती ॥ १७ ॥ जे से आरी सां प्रती वी बळे ॥ ते से वे दुवं जी जन्म जाळें ॥ आरी सा हा व
 भाव पाहिळे ॥ ते से कर्म कळे श्रीसक्तं ॥ १८ ॥ तो आरी सा हा ती वा या गीनां ॥ हार पे
 दी ल प्रती वी बता ॥ या नां व दत्ता नी धनता ॥ मी थ्या वा कर्मा ईका ॥ १९ ॥ जे सानुद

धरीनां नांवेशा स्वयेवंसा हीयेवशास॥ परीनटा सीनां हीनाश॥ तेसा हरीवेशा
वतारी॥ १००॥ येदुवंशी श्रीसहस्रनाथ॥ सकलकर्मसिदा जलीस॥ सृष्टी रची यतीनीय
नुक्क॥ यासी परमाद्भुतहेकाछ॥ १॥ नमेळ कीतांसा हयसंगे॥ सहस्रसृष्टीसृजनीजांगे॥ ते
प्रतीपाळुनीयेथाभांगे॥ संहारनवेगस्वयंउर॥ सहस्रसृष्टीपाळुसंहारी॥ हेप्रयसृज
गीदीसेथेरी॥ कर्मकरनीतोपवीकारी॥ कांदावीकारीबळेसहस्र॥ ३॥ सहस्रंअंतयोमी
सर्वपुतां॥ जगत्कर्मोपासककर्ता॥ धर्मकरनीतोपवीकारी॥ वीदेहानीजरपे॥ ४॥ असा
अगादश्रीसहस्रमहीमां॥ मर्यादानपेवसीउरकब्रह्म॥ यावादेहोमीवीदेहसां॥ गे
ळानीजधामांतेंगेयोगं॥ ५॥ येकीअवतारीसहस्रनाथ॥ देहीदावीकेवीदेहकर्मोते॥ ते
मागेपरीसवीकेवुते॥ एकमागुतेंसांगेन॥ ६॥ सातदीवसगेवर्धन॥ नीजकरीधरनीजा
तां॥ छेद्रावाहरीळामांन॥ कीदेहीपूजेअसहस्र॥ ७॥ दावाडीप्राणीलाआपळा॥ ला
जवीलाहुताशन॥ रासकीडाकरनीजांतां॥ हरीळामांनमदनाका॥ ८॥ समूद्रसार

१०

११

नीमा
क्या

नीमाघारा॥ वसवीकेजीजनगरा॥ नीशानमोउतां मथुरा॥ द्वारकापुराभांगीकी
॥१॥ सेउनीभाजीवेपाठा॥ चुसकेलेरपीजनं॥ दक्षायं तथामीषापठा॥ हेनीजकक्ष
ठांदावीके॥१॥ येठेवेदेहीश्रीदक्षनाथा॥ जाकावहेवहरपसमस्त॥ ब्रंहाकातउनी
तथं॥ गर्वहतलोकेका॥११॥ **टीका**॥ मर्यादयेगुरुसुवेमकोकनीतं॥ हांवानयछरणादःपर
मखदधं॥ जीयेतकातकमपीडमरावनीका॥ किखावजेखरनयंभुगफसदेहं
॥१२॥ **टीका**॥ श्रीदक्षयेठेवेदेहेसी॥ जाउनीयांयेमलोकासी॥ नीग्रहंनीयेमकाकासी
गुरुसुतासीभांगीके॥१३॥ उत्तरेमीयेमलोकासी॥ जळतां ब्रंहांस्वमीडाशकी॥ दुज
राखीकेभाकांती॥ स्ववचश्रीपतीपावजां॥१४॥ दुजराखाव्यादेवकारणं॥ उसीमा
तासीवाकीशरणां॥ दक्षशरणांगतांकारण्यं॥ संकटहरणीजसकां॥१५॥ यादवादेख
तांद्वारकापुरी॥ हीजसुतराखतांसटकीवराजी॥ अर्जुनवेमंसीप्रतीज्ञाकरि॥ तंवता
स्वशरीरीहारपका॥१६॥ ब्राम्हणेजीमितीलेयासी॥ थोरकाजाजाकाअर्जुनासी

१११

ते ठो कळवळळ हृशी मेरी ॥ सकसाया सी पावळा ॥ १८ ॥ अर्जुनां सहीत हृशी मेरी
रथें सीरी वेसागरासी ॥ द्वीजसुत हो ते नारायेणां पासी ॥ ते द्वारगेसी आंजी के ॥ १९ ॥
एवं सक संकट नीवारण ॥ नीलांगे गरी श्री लक्ष्म ॥ लक्ष्म प्रतापा ये महीमान ॥ ऐकसां
गेन अळोकी ॥ १८ ॥ बांणां सुरा नो के वार ॥ गरं नीवाळामा हारुद्र ॥ संवेनं दीपुंगी
रवीरपद्र ॥ स्वां मी का ती के सी हर जी ती का दळे ॥ १९ ॥ उग्रासी ही जती अग्र ॥ पयं क
रा पयं कर ॥ तो जी ठो नीं का का डी रद्र ॥ बांण सुजा पार के दीळा ॥ २० ॥ श्री लक्ष्म वच
न अवी अगाध ॥ जे ठो के का मा हा अ प रा धा ॥ ख दे हे सी उरा व्या धा ॥ खग प्रसी ध धा
डीळा ॥ २१ ॥ ये ह डे श्री लक्ष्म पासी ॥ तो का ये राखे न श के ख दे हा सी ॥ दे ही दे ह त नां ही
या सी ॥ गे का नी ज धां मां सी नी ज स ता ॥ २२ ॥ ये ह डे साम साम र्थ श्री लक्ष्म पासी ॥ तर कां
गे का नी ज धां मां सी ॥ ये को की ते ठो दे हे सी ॥ रा हा ता सा सी प ये को ये ॥ २३ ॥ ऐ सा प



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com